B.Com. Part II
(Economic Environment in Rajasthan) PAPER -1st
E.A.F.M.

Unit-I

आर्थिक पर्यावरण :– किसी देश का भौतिक व सामाजिक वातावरण को जो मानव की आवश्यकता की पूर्ति करने हेतु सहायक होता है। आर्थिक पर्यावरण कहलाता है।

स्टटीवेन्ट के अनुसार :– आर्थिक पर्यावरण से तात्पर्य सामान्यतः बाह्य शक्तियों से है जिनका किसी व्यवसाय पर प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव होता है।

विशेषताएँ :–

- आर्थिक क्रियाओं से सम्बन्धित
- समाज में धन का वितरण
- आर्थिक विचारधारा
- नियोजित अर्थववस्था
- आधारभूत ढाँचा (बिजली, पानी, शक्ति, परिवहन, संचार, बैंकिंग एवं बीमा)
- नैतिक तत्व

अंग/प्रभावित करने वाले तत्व :–

- मानवीय संसाधन
- प्राकृतिक
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास
- आर्थिक प्रणाली का स्वरूप
- पर्यावरण संरक्षण
- आर्थिक सन्नियम
- अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक दशाएँ

प्रश्न–1. भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए/ भारतीय अर्थव्यवस्था सम्पन्नता के मध्य निर्धनता व्याप्त है इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– भारत एक विकासशील देश है इसकी विशेषताएँ निम्न प्रकार है –

<u>कम प्रति व्यक्ति आय</u>

कम राष्ट्रीय आय — कृषि की प्रधानता
जनसंख्या में विस्फोटक वृद्धि — निम्न जीवन स्तर

<u>बेरोजगारी</u>

धन का असमान वितरण — निर्धनता का कुचक्र
तकनीकी ज्ञान का अभाव

<u>असंतुलित विदेशी व्यापार</u>

सम्पन्नता में दरिद्रता — विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था
बाजार अपूर्णता — मिश्रित अर्थव्यवस्था

भारत एक समृद्ध राष्ट्र है जिसमें निर्धन लोग निवास करते है – भारत में अथाह भण्डार के साधन एवं वन सम्पदा होते हुए भी पूंजी का अभाव पाया जाता है।

सम्पन्नता के कारण :–

- उत्तम भौगोलिक स्थिति
- विस्तृत उपजाऊ मैदान
- विशाल वन सम्पदा

J.D.P.G. COLLEGE

- अथाह खनिज सम्पदा
- शक्ति के विशाल स्त्रोत
- अनुकूल जलवायु
- उपयोगी पशु सम्पदा
- तकनीकी विशेषज्ञ

निर्धनता के कारण/गरीब क्यों है :–

- प्रति व्यक्ति आय कम
- बेरोजगारी
- निम्न जीवन स्तर
- पूजी निर्माण का निम्न स्तर
- भारी ऋणग्रस्तता
- परिवहन साधनों का अभाव
- पिछड़ी तकनीक
- निर्धनता का कुचक्र

प्रश्न–2 राजस्थान में जनसंख्या नियंत्रण हेतु अपनाये जाने वाले परिवार कल्याण कार्यक्रमों की विवेचना कीजिए। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की विवेचना कीजिए।

उत्तर– जनसंख्या स्थिरीकरण सुनिश्चित करने एवं शिशु व मातृ मृत्यु दर को कम करने के उद्देश्य से परिवार कल्याण कार्यक्रम क्रियान्वित किये गये है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) 2005–

- आशा सहयोगिनी
- जननी एक्सप्रेस (104)
- 108 Toll Free
- राष्ट्रीय मोबाइल मेडिकल यूनिट
- 104 Toll Free Service
- ग्रामीण स्वास्थ्य और स्वच्छता समिति
- आयुष
- मुख्यमंत्री जीवन रक्षा कोष (BPL) (1 Jan, 2009)
- मिशन इन्द्र धनुष अभियान (25 Dec,2014)

Unit-II

प्रश्न–1 राजस्थान में ग्रामीण विकास हेतु शुरू किये गये विभिन्न कार्यक्रमों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए ? ''ग्रामीण विकास के नवीन कार्यक्रमों की व्याख्या कीजिए।''

उत्तर– **कार्यक्रम –**

- स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना (1999)
- अन्व्योदय योजना
- जवाहर ग्राम समृद्धि योजना (JRY) 1999
- सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योयजना (2001)
- प्रधान मंत्री ग्रामोदय योजना (2000)
- मनरेगा (2005)
- सूखा सम्भाव्य क्षेत्र कार्यक्रय DPAP (1973-74)
- मरू विकास कार्यक्रम (1977-78)
- इन्दिरा आवास योजना
- बीस सूत्री कार्यक्रम (1975)

J.D.P.G. COLLEGE

राजस्थान जन जातीय कल्याण से सम्बन्धित कार्यक्रमः–

- मादा (परिवर्तित क्षेत्र विकास दृष्टिकोण जनजाति–उपयोजना क्षेत्र
- मादा समुदाय
- बिखरी हुई जनजाति विकास कार्यक्रम
- सहरिया विकास कार्यक्रम

प्रश्न–2 राजस्थान आर्थिक विकास की प्रमुख बाधाएँ क्या है ? इनकों दूर कैसे किया जा सकता है ?

उत्तर– राजस्थान राज्य सूखा, अकाल, विशाल मरूस्थल, प्रदूषण, पेयजल की कमी, बेरोजगारी व गरीबी से ग्रसित है।

राजस्थान में आर्थिक विकास में बाधाएं :–

A भौगोलिक बाधाएं	B कृषि विकास में बाधाएं	C औद्योगिक विकास में बाधाएं	D जनसंख्या सम्बन्धी बाधाएं
रेगिस्तान	मानसून पर अधिक निर्भरता	आधारभूत संरचना का अभाव	
मानसून की अनिश्चिता	सिंचाई का अभाव	उद्योगों एवं खनिज विकास	
अकाल एवं सूखा पड़ना	भूमि सुधारे का अभाव	सरकार नीति औ.रूग्णता	
जल संसाधनों का नितान्त अभाव	कृषि संसाधनों की कमी	श्रम सम्बन्धों की समस्या	
	क्षार की समस्या		

प्रश्न–3 राजस्थान में आर्थिक नियोजन की आवश्यकता व सफलताएं अथवा उपलब्धियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– **महत्व –**

- कृषि का विकास
- पशु पालन
- औद्योगिकीकरण
- कृषि साधनों का विकास
- आधार भूत ढाँचा
- सामाजिक सेवा में सुधार (शिक्षा, चिकित्सा, आवास)
- रोजगार
- गरीबी निवारण
- प्रकृति प्रकोषों से मुक्ति

उपलब्धियाँ :–

- राज्य की आय में वृद्धि
- कृषि उत्पादन एवं सिचाई
- औद्योगिक विकास
- सड़कों का विकास
- शिक्षा की प्रगति

असफलताएं :–

- प्रतिव्यक्ति आय कम
- वित्तीय साधनों का अभाव
- जनसंख्या में तीव्र वृद्धि

प्रश्न–4 राजस्थान में कृषि विकास को संक्षेप में समझाइये।
कृषि की व्यूहरचना पर लेख लिखो ?

J.D.P.G. COLLEGE

उत्तर– राजस्थान की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। राज्य की 62% जनसंख्या अभी भी कृषि एवं पशुपालन से अपना जीविकापार्जन करती है।

महत्व/भूमिका :–

- रोजगार का आधार
- औद्योगिक कच्चा माल
- बैंकिग व बीमा क्षेत्र का विकास
- उद्योगों का विकास
- परिवहन व संचार में महत्व

कृषि की नवीन व्यूह रचना – हरित क्रान्ति (1966-67)

- उन्नत बीज कार्यक्रम
- रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग
- बहुफसल कार्यक्रम
- लघु सिंचाई योजनाएं
- पौध सरंक्षण
- कृषि वित्त सुविधाएं
- कृषि विपणन
- भू–संरक्षण
- पोषक मूल्य
- कमजोर वर्गो के लिए परियोजनाएं

Unit-V
Chapter-20

राजस्थान की औद्योगिक नीति 1994 की नई औद्योगिक नीति :–

1994 की नीति का मुख्य उद्देश्य तीव्रगति से आर्थिक गति से आर्थिक विकास, निर्यात में वृद्धि विदेशी विनियोग को आकर्षित करना।

विशेषताएं :–

1. नवीन नीति की आवश्यकता
2. उद्देश्य
3. औद्योगिक संरचना
4. किस्म सुधार
5. निर्यात वृद्धि के प्रयास
6. SC, ST के उद्यमियों में सहायता
7. श्रम सम्बन्धों में सुधार
8. विपणन सहायता
9. राजकोषीय प्रयास एवं वित्तीय प्रेरणा
10. वित्तीय संरचना को प्राथमिकता

आलोचनाएं :–

- सार्वजनिक उपक्रम की उपेक्षा
- रियासते सीमित
- लघु एवं कुटीर उद्योगों की अपेक्षा
- विद्युत का अभाव

राजस्थान उद्योग एवं निवेश एवं सर्वद्धन नीति :–2010

J.D.P.G. COLLEGE

राजस्थान निवेश प्रोत्साहन स्कीम (2014) :-

राजस्थान में लघु एवं कुटीर उद्योग :–

लघु उद्योग :– लघु उद्योग से आशय 25 लाख से धिक एवं 5 करोड तक के विनियोजन से है।

सूक्ष्म उद्योग :– 25 लाख तक का मशीन में विनियोजन से है।

Notes - लघु औद्योगिक इकाई से आशय स्थायी सम्पत्ति के रूप में प्लॉट, मशीनरी में अधिकतम 100 लाख के Investment से है।

कुटीर उद्योग :– कुटीर उद्योग का संचालन एक ही परिवार के सदस्यों द्वारा अपने ही घर में परम्परागत तरीके से किया जाता है। इसका क्षेत्र सीमित होता है।

अनुषंगी उद्योग :–ऐसे उद्योग जो छोटे पुर्जे मशीन एवं संयंत्र का निर्माण एवं मरम्मत के कार्य में लगे हुये है जिनकी Investment सीमा 1 करोड़ रूपये है।

लघु व कुटरी उद्योग का महत्व :–

1. रोजगार
2. कम से कम पूंजी विनियोजित
3. मुद्रा प्रसार पर नियंत्रण
4. विकेन्द्रीकरण
5. संतुलित विकास

Unit-V
Chapter-22

ग्रामीण वित्त

अर्थ :– ग्रामीण वित्त से आशय निवेश किये जाने वाले धन की उस राशि से है जो कार्य पर उत्पादकता वृद्धि में सहायक होता है।

ग्रामीण वित्त की आवश्यकता / महत्व :–

1. कृषि आदान खरीदने
2. जोखिम में सुरक्षा
3. जमानत का अभाव
4. विपणन की मजदूरी
5. सामाजिक दायित्व की पूर्ति
6. भण्डार की उचित व्यवस्था न होना
7. पुराने ऋण चुकाने के लिए

ग्रामीण वित्त के प्रकार :–

- अल्पकालीन (15 माह तक)
- मध्यकालीन (5 वर्ष तक)
- दीर्घ कालीन (5 से 20 वर्ष तक)

स्त्रोत :–

- गैर–संस्थागत
  - साहूकार
  - देशी बैंकर
- संस्थागत
  - RBI (1935)
  - SBI (1955)
  - सहकारी बैंक
  - व्यापारिक बैंक
  - RRB (22 July, 1982)
  - नाबार्ड (1982)
- सरकार

J.D.P.G. COLLEGE

सहकारी बैंक :– सरकारी बैंक का ढांचा त्रिस्तरीय है। जिसे राज्य स्तर, जिला स्तर व ग्रामीण स्तर पर साज उपलब्ध कराया जाता है।

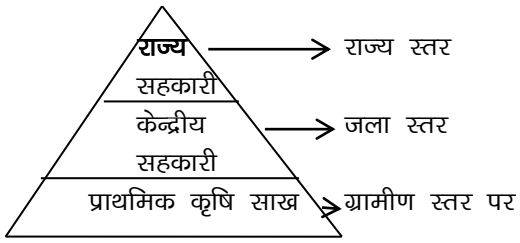

Note :- कृषि साज की व्यवस्था केन्द्र सरकार द्वारा दी जाती है राज्य द्वारा भूमि सुधार ऋण Act 1983 व कृषि ऋण Act 1884 के अन्तर्गत दिया जाता है।

किसान साख पत्र

स्थापना :– अगस्त 1998

विशेषताएं :–

- पात्रता (5000 Rs.)
- किसान कार्ड
- साख की सीमा
- अवधि (3 वर्ष)
- निर्गमन प्रक्रिया
- साख की राशि
- ब्याज दर
- जारी करने वाली संस्था
- दुर्घटना बीमा

ग्रामीण वित्त के दोष :–

1. महाजनो का प्रभाव
2. अपर्याप्त वित्त व्यवस्था
3. ब्याज का भार
4. ऋण वितरण में पक्षपात
5. भ्रष्टाचार
6. समय पर ऋण उपलब्ध
7. ग्रामीण साख में कृषि ऋणों का हिस्सा

सुझाव :–

1. सहकारी साख व सहकारी विपणन में आवश्यक
2. परस्पर समन्वय
3. सहकारिता का प्रचार
4. कुशल प्रबंध
5. केन्द्रीय सहकारी बैंक
6. जमा बीमा पद्धति
7. ऋण चुकान पर जोर
8. उपज क्षण पद्धति
9. किसानों में बचत आदतों को बढ़ावा देना।

J.D.P.G. COLLEGE